Volume: 5 Issue: 1 Pages: 58-61

आधुनिक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में विश्लेषण

[*1] डॉ. रीमा कुमारी

[*1] सहायक अध्यापिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, मझौली खेतल, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 18/Dec/2025
Accepted: 13/Jan/2026

***Corresponding Author**
डॉ. रीमा कुमारी
सहायक अध्यापिका, उच्च माध्यमिक विद्यालय, मझौली खेतल, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश
यह शोध आलेख श्री अरविन्द के सर्वांग दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा के आधार, उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम के संदर्भ को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे देखने तथा नीति के प्रावधानों में इसके समावेशन का विश्लेषण करता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर, जीवन के समग्र विकास का साधन माना गया है। श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन इसी परंपरा की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आत्मिक सभी स्तरों पर संतुलित उन्नयन है। यह अवधारणा भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गहराई से प्रतिबिंबित होती है, जो कि समावेशी, बहु-आयामी और भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली की पैरवी करती है।

मुख्य शब्द: सर्वांग दृष्टिकोण, परम सत्य, समग्र शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रस्तावना:

श्री अरविंद का सर्वांग दर्शन

श्री अरविंद (1872-1950) भारतीय ऋषि परंपरा की उज्जवल कड़ी है। वे उपनिषदों के भाषा के कारण नहीं है बल्कि स्वयं उपनिषादिक सत्य के दृष्टा है। वे न केवल एक महान योगी, आध्यात्मिक गुरु और राष्ट्रवादी विचारक थे, बल्कि वे आधुनिक भारत के अग्रणी शिक्षाशास्त्रियों में से एक थे। उनका दर्शन उपनिषदों के दर्शन के समकक्ष है। उनका महान ग्रंथ 'लाइफ डिवाइन' सत्य के साक्षात्कार का वर्णन है।

उनके अनुसार ब्रह्म संसार में भी है और संसार से परे भी है। जिसे दर्शन में ब्रह्मा कहा जाता है उसे ही धर्म में ईश्वर कहना चाहिए। ईश्वर सृष्टि का सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारक है। ईश्वर सृष्टि का सार, पूर्ण, मुक्त, सनातन और सर्वात्मा है। वह पुरुष है और ब्रह्म निरपेक्ष सत्ता है, किंतु अंततः दोनों एक है। ईश्वर प्रकट है और ब्रह्म अप्रकट है। विश्व ब्रह्म की लीला है। शिव का उन्मुक्त नृत्य है माया नहीं है। यह उस असीम शक्ति की गति का परिणाम है। संसार की सृष्टि करने वाली शक्ति चित है। यह चेतन शक्ति शुद्ध सत्ता का भाग है। अतः सर्वोच्च शक्ति गतिशील भी है और स्थिर भी। इस चेतन शक्ति को अरविंद ने माता कहा है। माता देवत्व है और सर्जनकर्ता तत्व है। माता इन तीन शक्तियों- तत्व, संसार और जीव में अवतरित होती है। उनके अनुसार मानवता, विश्वात्मा एवं परमात्मा तीनों ही परम सत्य है। यह विश्व सच्चिदानंद की लीला है। वह परम तत्व अनेक में एक की अनुभूति के लिए उस सृष्टि को बिगाड़ भी देता है और एक में अनेक की अनुभूति के लिए उसे पुन: बना भी देता है। यह सब वह परम शक्ति केवल आनंद के लिए किया करती है।

उनका मानना है कि ज्ञान और अज्ञान परस्पर विरोधी नहीं है। अज्ञान का स्वाभाविक गंतव्य ज्ञान ही है। अविद्या में विद्या, भोग में त्याग और संसार में सन्यास की उपलब्धि ज्ञान है। अज्ञान आत्मा का स्वाभाविक गुण नहीं है। संपूर्ण सत्ता की क्रिया भी अज्ञान नहीं है। यह उस चित् की एकांगी क्रिया है। श्री अरविंद के अनुसार अज्ञान, ज्ञान का ही एक रूप है। दु:ख, पाप और कष्ट भी अनादि एवं निरपेक्ष नहीं है। ये तो हमारी बाह्य चेतना के सीमित क्षेत्र के क्षणिक अनुभव है।

उन्होंने विकास के सिद्धांत का विवेचन करते हुए कहा कि- जब परम सत्ता पार्थिव सत्ता में उतरती है तो यह जगत प्रकट होता है। यह अवरोहण है। पार्थिव सत्ता जब परम की ओर आरोहण करती है तो प्रकृति प्रकट होती है। अवरोहण में आरोहण के विपरीत क्रम होता है। आरोहण का क्रम है- सत, चित, शक्ति और आनंद, अधिमानस, मानस, प्राण और जड़त्व। अवरोहण का क्रम है- जड़त्व, प्राण,

मानस, आधिमानस, आनंद, चित्, शक्ति और सत। विकास का क्रम विस्तार ऊंचाई और पूर्णता की दिशाओं में चलता है। समस्त पृथ्वी का रूपांतर विकास है। विकास का निर्देशन अंत से होता है, आदि से नहीं। गंतव्य का निर्धारण अंतस्थ सच्चिदानंद द्वारा होता है। विकास की अंतिम अवस्था में अतिमानस का अवतरण होता है।

मानस और अतिमानस के बीच की कड़ी अधिमानस है। अधिमानस अज्ञान का प्रथम क्षेत्र है। अपने अनुभव में यह सार्वभौम और अनेक भेदों को सामंजस्य पूर्ण अनुभव में पिरो देने का यह कार्य करता है। मानस को परस्पर भेद दिखाई पड़ता है जबकि अधिमानस को पूरक तत्व दिखाई पड़ता है। अतिमानस के आविर्भाव से मानव प्राणी दिव्य प्राणी में परिवर्तित हो जाएंगे। तब दिव्य जाति में दिव्य चेतना अनेक रूपों में कार्य करेगी। दिव्य व्यक्ति आध्यात्मिक आरोहण के साथ सुख-दु:ख में समान भाव वाला हो जाएगा।

पृथ्वी पर दिव्य जीवन की स्थापना के लिए पूर्ण योग आवश्यक है। दिव्य जीवन में प्रेम, सहानुभूति एवं प्रत्यक्ष पूर्ण ज्ञान कार्य करता है। सभी का लक्ष्य योग हैं। पूर्ण योग की क्रिया जीवात्मा के अतिमानस, विश्वात्मा एवं परमात्मा में प्रवेश का साधन है। पूर्ण योग का उद्देश्य रूपांतर की सिद्धि है। श्री अरविंद के शब्दों में- "जिस योग की साधना हम करते हैं वह केवल हमारे लिए ही नहीं. प्रत्यूत भगवान के लिए है"। इसका उद्देश्य है- इस जगत में भगवान की इच्छा कार्यान्वित करना, एक आध्यात्मिक रूपांतर साधन करना और मनुष्य जाति के मनोंमय, प्राणमय और अन्यमय जीवन में दिव्य प्रगति और दिव्य जीवन को उतार लाना। उसका उद्देश्य मानव सत्ता की मुक्ति और रूपांतर सिद्ध करना है। इस योग के लिए आत्मसमर्पण, दिव्य शक्ति की क्रिया को अपने अंदर देखना तथा सभी वस्तुओं को भगवान के रूप में देखना आवश्यक है। इन तीनों प्रक्रियाओं के अतिरिक्त आदि मानस में आरोहणार्थ विभिन्न चक्रों पर विजय पाना आवश्यक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी सर्वांग दर्शन में शिक्षण की अवधारणा को 'Integral Education' (समग्र शिक्षा) के रूप में परिभाषित किया, जिसमें पांच अंगों—शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक—का संतुलित विकास होता है ।

सर्वांग शिक्षा का आधार

श्री अरविंद का मानना था कि- जीव की आत्मा में ज्ञान सदा सुसुप्तावस्था में गुप्त रहता है। शिक्षा का आधार या वाहन अथवा यंत्र अंतःकरण है। अतः अंतःकरण की संरचना पर उन्होंने गंभीर विचार किया है। उनके अनुसार अंतःकरण के चार पटल होते हैं- चित, मानस, बुद्धि और अंतर्दृष्टि।

चित्त

जब हम कोई बात याद करते हैं तो वह चित्त में एकत्र होती है। यह भूत कालिक मानसिक संस्कार है। चित्त रूपी स्मृति कोसों से ही क्रियाशील स्मृति कभी-कभी कुछ चीजों को चुन लेती है। यह चुनाव उपयुक्त अथवा अनुपयुक्त हो सकता है। अतः इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

मानस

मानस को दर्शन की भाषा में मस्तिष्क कहा जाता है। इसका कार्य ज्ञानेंद्रियों से प्रत्ययों को ग्रहण करना और उसे विचारों में परिणत करना है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध संबंधी सूचना मस्तिष्क को ज्ञानेंद्रियों से प्राप्त होती है। इन सूचनाओं को विचारों में परिवर्तित कर देना मस्तिष्क का काम है। मस्तिष्क स्वयं भी प्रत्यय एवं प्रतिमानो को ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार पांच ज्ञानेंद्रियों के अतिरिक्त वह स्वयं भी एक उपकरण है। उत्तम विचार के लिए पांचों ज्ञानेंद्रियों एवं मस्तिष्क का प्रशिक्षित होना आवश्यक है। इन उपकरणों को सक्षम बनाना है।

बुद्धि

मस्तिष्क जिस ज्ञान को प्राप्त करता है उसे व्यवस्थित करने का वास्तविक यंत्र बुद्धि है। यह विचार शक्ति का पटल है। शिक्षण के लिए बुद्धि का सर्वाधिक महत्व है। इस में रचनात्मक, विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शक्तियां निहित होती हैं। बुद्धि दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग सोचने, विचारने, निर्णय करने, स्मरण करने, आदेश देने, अवलोकन करने एवं परिकल्पना करने की शक्तियों से संपन्न होता है और दूसरा पक्ष आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शक्तियों से युक्त होता है। बुद्धि का दूसरा पक्ष अंतर बताने अन्वेषण करने एवं तर्क-वितर्क करने के बाद परिणाम निकालने में कुशल होता है। प्रथम पक्ष ज्ञान का अधिष्ठाता है तो वहीं द्वितीय पक्ष ज्ञान का सेवक मात्र है। इन शक्तियों से तर्कपूर्ण विचार संभव है। अतः बुद्धि के दोनों भागों को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।

अंतर्दृष्टि

इससे ज्ञान का प्रत्यक्ष दर्शन होता है और इसके आधार पर व्यक्ति भविष्य कथन करने में समर्थ होता है। मस्तिष्क की यह शक्ति अभी पूर्णता को नहीं प्राप्त कर सकी है। यह विकास की अवस्था में है। किंतु मानव के अंतःकरण में यह शक्ति है और यदि इस दुर्लभ शक्ति का विकास किया जाए तो मानवताकी अनेक समस्याओं का समाधान मिल जाय। मानव की तार्किक बुद्धि, अपनी चंचलता एवं पक्षपात पूर्णता के कारण इस शक्ति को विकृत कर देती है।

इस प्रकार श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का वास्तविक आधार मानव स्वयं है—उसका चेतन अस्तित्व, उसकी आत्मा। वे मानते थे कि प्रत्येक बालक के भीतर एक दिव्यता निहित होती है जिसे पहचानना, विकसित करना और अभिव्यक्त करना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है[^2]। इस दृष्टिकोण में बालक को एक बीज के रूप में देखा जाता है, जिसमें पूर्ण वृक्ष बनने की क्षमता निहित है। अतः शिक्षा का दायित्व उस अंतर्निहित क्षमता को पोषित करने का है, न कि केवल बाह्य ज्ञान भरने का। इस शक्ति के विकास में अभी तक बहुत कम ध्यान दिया गया है। अत: शिक्षकों को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी विचारधारा को समर्थन देती है। इसका जोर शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा, आत्म-प्रेरणा, समावेशिता एवं सीखने की स्वतंत्रता पर है, जो श्री अरविन्द के दर्शन से गहराई से मेल खाती है ।

सर्वांग शिक्षा के उद्देश्य

श्री अरविंद के अनुसार वास्तविक एवं सच्ची शिक्षा वह है जो बालक की सुषुप्त शक्तियों को उद्बुद्ध कर दें। उनका मानना है कि व्यष्टि एवं समष्टि की संकीर्ण सीमा से निकालकर बालक को मानवतावादी एवं समग्रवादी बनाना है। विकास की प्रक्रिया में मनुष्य ने आत्मा, मस्तिष्क एवं विवेक की शक्तियों तथा स्व का विकास कर लिया है। शिक्षा को मानव आत्मा की मांगों की पूर्ति करनी चाहिए ।

शिक्षा का उद्देश्य प्रकृति की सर्वोत्तम शक्ति को विकसित करना होना चाहिए। श्री अरविंद ने 'ऐसेज ऑन द गीता' भाग 2 में लिखा है, बालक की शिक्षा को उसकी प्रकृति में जो कुछ सर्वोत्तम, सर्वाधिक अंतरंग और जीवनपूर्ण है उसको व्यक्त करना होना चाहिए। मनुष्य की क्रिया और विकास जिस ढांचे में डालना चाहिए वह उसके अन्तरंग गुण और शक्ति का ढांचा है। उसे नई वस्तुएं अवश्य प्राप्त होनी चाहिए परंतु वह उनको सर्वोत्तम रूप से और सबसे अधिक प्राणमय रूप में स्वयं अपने विकास प्रकार और अन्तरंग शक्ति के आधार पर प्राप्त होगा।

अत: आत्म शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना शिक्षा नहीं है। शिक्षा का काम मानव के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन करना है। सामान्य मस्तिष्क के अतिरिक्त एक विशिष्ट मस्तिष्क भी होता है जो जीवन एवं विषयों के परे स्थित है और

जो इस संसार में अपना प्रकाशन करता है। इस विशिष्ट मस्तिष्क की अनुभूति करना, कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है, जो मानव आत्मा एवं सार्वभौमिक आत्मा के मध्य की कड़ी है। इस दृष्टि से श्री अरविंद अंतरराष्ट्रीयता के सच्चे उपासक होते हुए भी राष्ट्रवाद के समर्थक हैं और शिक्षा को राष्ट्रीयता पर आधारित करना चाहते हैं। वे कहते हैं हम जिस शिक्षा की खोज में हैं वह एक भारतीय आत्मा और आवश्यकता तथा स्वभाव और प्रकृति के लिए उपयुक्त शिक्षा है। केवल ऐसी शिक्षा नहीं जो भूतकाल के प्रति भी आस्था रखती हो बल्कि भारत की विकासमान आत्मा के प्रति, उसकी भावी आवश्यकताओं के प्रति, उसकी आत्मोत्पत्ति की महानता के प्रति, उसमें चरित्र निर्माण के प्रति, व्यक्तित्व विकास के प्रति और उसकी सास्वत आत्मा के प्रति आस्था रखती है।

श्री अरविंद के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण केवल मनोविज्ञान के सिद्धांत ही नहीं करते वरन उस पर सामाजिक दर्शन एवं भावी समाज की परिकल्पना का भी प्रभाव पड़ता है। उन्होंने दैवी समाज की कल्पना की है। अतः शिक्षा का उद्देश्य निर्धारण करने में इस आदर्श का प्रभाव होना ही चाहिए। समाज में प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का योगदान है। अतः शिक्षा में किसी एक पर ही बल देना उचित नहीं होगा। स्पष्ट है की श्री अरविन्द शिक्षा का उद्देश्य आत्मविकास एवं ईश्वरीय चेतना की प्राप्ति को मानते है।

श्री अरविन्द ने शिक्षा के तीन मुख्य उद्देश्यों का उल्लेख किया है:

1. स्व-ज्ञान (Self-Knowledge)
2. स्व-विकास (Self-Development)
3. ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति (Realization of Divine Purpose)

उनके अनुसार शिक्षा केवल रोज़गार प्राप्ति का साधन न होकर आत्मा के पूर्ण विकास की प्रक्रिया है, जिसमें शरीर, हृदय, मस्तिष्क और आत्मा का समन्वयात्मक विकास होता है । यह शिक्षा व्यक्ति को केवल एक सामाजिक प्राणी नहीं, बल्कि एक दिव्य अस्तित्व के रूप में पहचानने की प्रक्रिया है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, नैतिकता, आत्म-निर्भरता और जीवन कौशल का विकास है, जिससे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण हो सके ।

सर्वांग शिक्षा का पाठ्यक्रम

श्री अरविन्द के पाठ्यक्रम की अवधारणा में लचीलापन, बहुआयामीता और आध्यात्मिकता पर विशेष बल है। उनका पाठ्यक्रम संबंधी दृष्टिकोण औपचारिक विषयों की सीमाओं से परे जाकर, स्वाभाविक रुचियों और अंतःप्रेरणा पर आधारित है। वे मानते थे कि प्रत्येक बालक की अलग-अलग प्रवृत्तियाँ होती हैं, जिनका पोषण पाठ्यक्रम द्वारा किया जाना चाहिए। उनके अनुसार पाठ्यक्रम रुचिपूर्ण होना चाहिए। तथा उसमें उन समस्त विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक, बौद्धिक, चारित्रिक विकास हो सके। इसके अलावा पाठ्यक्रम आकर्षित करने वाली हो तथा बालक के जीवन की वास्तविक क्रियाओं से संबंधित हो और वह उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक होने के साथ ही विश्व ज्ञान के प्रति भी बालक में रुचि जागृत करने वाली होनी चाहिए। उनका शिक्षा मॉडल चार स्तरों पर पाठ्यक्रम को लागू करता है:

- शारीरिक शिक्षा- स्वास्थ्य, खेलकूद, शरीर नियंत्रण
- वाइटल शिक्षा (Vital Education)- इच्छाओं, भावनाओं और आत्मनियंत्रण का विकास
- मानसिक शिक्षा- तार्किक सोच, स्मृति, कल्पना और बुद्धि का प्रशिक्षण
- आध्यात्मिक शिक्षा- आत्मा की खोज, मौन और ध्यान का अभ्यास

श्री अरविंद बालक के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित विषयों को स्थान प्रदान करते हैं-

1. प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, सामान्य विज्ञान, चित्रकला, राष्ट्रीय इतिहास, गणित एवं सामाजिक अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा, फ्रेंच, अंग्रेजी, गणित, कला, विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, सामाजिक विषय आदि।
3. उच्च स्तर अथवा विश्वविद्यालय स्तर पर अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच साहित्य, भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, गणित, रसायन शास्त्र, भौतिकी, जीव विज्ञान, तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध।
4. व्यवसायिक शिक्षा के लिए सिविल, मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल, इंजीनियरी, नर्सिंग, टंकण, आशुलिपि, काष्ठकला, शिल्पकारी, सिलाई, कुटीर उद्योग, चित्रकारी, भारतीय तथा यूरोपीय संगीत और नृत्य।

उपर्युक्त पाठ्यक्रम सिद्धांतों पर विचार करने के उपरांत श्री अरविंद की ये विचारधारा स्पष्ट हो जाती है कि वह बालक के मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक, सभी स्तरों के विकास के पक्षपाती थे और वह उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की नई पीढ़ी को वैश्विक स्तर पर सक्षम, नैतिक रूप से दृढ़ और सांस्कृतिक रूप से जागरूक बनाने का एक सशक्त प्रयास है। इसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

समग्र शिक्षा का दृष्टिकोण-यह नीति न केवल अकादमिक बल्कि व्यावसायिक, कौशल आधारित, और मूल्यपरक शिक्षा पर बल देती है। पाठ्यचर्या में लचीलापन-नीति विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार विषय चुनने की पूरी स्वतंत्रता देती है। शिक्षा का भारतीयकरण- नीति के द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति, योग, और नैतिक शिक्षा को शिक्षा के मुख्यधारा में शामिल किया गया है। पूर्व-प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक समरूप दृष्टिकोण- नीति में ECCE (Early Childhood Care and Education) से लेकर उच्च शिक्षा तक एक निरंतर और समन्वित प्रणाली विकसित किया गया है।

शिक्षक प्रशिक्षण एवं स्वायत्तता- शिक्षकों को सक्षम, स्वायत्त और प्रेरित बनाने की दिशा में ठोस प्रयास

श्री अरविंद के विचारों का NEP 2020 में प्रतिबिंब-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी समग्र, लचीला और बहु-विषयी पाठ्यक्रम पर ज़ोर दिया गया है, जिसमें विद्यार्थियों को कला, विज्ञान, व्यावसायिक शिक्षा, और खेल के विकल्पों में स्वतंत्रता दी जाती है। नीति का जोर शिक्षा में आध्यात्मिक मूल्यों, नैतिक शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक ज्ञान पर भी है [^7]। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में श्री अरविन्द के शैक्षिक विचारों का समावेश व्यापक रूप मे हुआ है क्योंकि इस नीति के कई प्रमुख बिंदु श्री अरविन्द के दर्शन से प्रेरित प्रतीत होते हैं जैसे-

- शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की पूर्ण अभिव्यक्ति: यह विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विज़न स्टेटमेंट में स्पष्ट रूप से दर्शित होता है।
- राष्ट्रीय चेतना का विकास: श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं, बल्कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण में योगदान देना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी एक जिम्मेदार नागरिक और वैश्विक मानव तैयार करने का प्रयास करती है।
- गुणवत्ता और समावेशिता: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 NEP हर वर्ग के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करती है, जो श्री अरविंद के सर्वांग विकास के सिद्धांत के अनुरूप है

- चरित्र निर्माण: नीति में नैतिकता, करुणा, सहानुभूति और आध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर ज़ोर दिया गया है।
- समग्र विकास: केवल अकादमिक दक्षता नहीं, बल्कि शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताओं को भी महत्व दिया गया है।
- शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण: प्रत्येक विद्यार्थी की अलग-अलग गति और शैली को पहचानते हुए शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण प्रणाली पर बल दिया गया है ।
- नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा: श्री अरविंद की तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान, और वैदिक ज्ञान को पुनः महत्व दिया गया है।
- सृजनात्मकता और आत्म-ज्ञान: दोनों विचारधाराएं आत्म-प्रकाशन और रचनात्मक अभिव्यक्ति पर बल देती हैं।
- प्रेरणादायक शिक्षण: श्री अरविंद के 'शिक्षक को जीवन का आदर्श बनना चाहिए' की भावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 'शिक्षकों को राष्ट्रनिर्माता' मानने की सोच में स्पष्ट परिलक्षित होती है।
- बहु-विषयी दृष्टिकोण: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहु-विषयी संस्थानों और शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है जो व्यक्तित्व के विविध पक्षों का विकास करता है।
- कला, संगीत, योग और खेल: शिक्षा में इनकी अनिवार्यता दोनों ही विचारधाराओं में प्रमुख है। ये गतिविधियाँ संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती हैं।
- आत्म-अन्वेषण की प्रवृत्ति: श्री अरविंद आत्म-साक्षात्कार को व्यक्तित्व का उच्चतम बिंदु मानते थे, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी छात्रों में चिंतन, आत्म-विश्लेषण और सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है।
- जिज्ञासा और अन्वेषण: दोनों में छात्रों की जिज्ञासा को प्रोत्साहन देने पर बल है।
- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण: श्री अरविंद के अनुसार शिक्षा छात्र की अंतरात्मा के अनुकूल होनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षार्थी-केंद्रित पद्धतियों को अपनाती है।
- मूल्यांकन प्रणाली में सुधार: केवल अंक आधारित मूल्यांकन के स्थान पर समग्र विकास के आकलन पर ध्यान दिया गया है ।

निष्कर्ष:

श्री अरविंद का सर्वांग दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों ही एक ऐसे शिक्षा तंत्र की कल्पना करते हैं जो केवल जानकारी प्रदान न करे, बल्कि ज्ञान, विवेक, नैतिकता और आत्मिक चेतना का विकास करे। श्री अरविन्द का सर्वांग दर्शन शिक्षा को आत्मा के उत्थान और राष्ट्र के नव-निर्माण से जोड़ता है। उन्होंने शिक्षा को साधन नहीं, साध्य माना है—एक ऐसी प्रक्रिया जो मानव को उसकी अंतर्निहित दिव्यता की अनुभूति कराए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी दृष्टिकोण को आधुनिक संदर्भों में लागू करने का प्रयास करती है। दोनों की दृष्टियों का समन्वय भारतीय शिक्षा को वैश्विक पटल पर आत्मनिर्भर, नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से सशक्त बना सकता है। यह न केवल एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर सकता है, बल्कि एक संतुलित, जागरूक और उत्तरदायी मानव समाज की नींव रख सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और श्री अरविंद का दर्शन एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि नीति निर्माण में उनके दृष्टिकोण को और भी गहराई से आत्मसात किया जाए, तो भारत न केवल वैश्विक शिक्षा मानकों पर खड़ा हो सकता है, बल्कि एक नैतिक और विवेकशील समाज का निर्माण भी संभव हो सकेगा।

संदर्भ सूची:

1. सेठी, कीर्ति देवी, भरतीय शिक्षा दार्शनिक, पृष्ठ 2811
2. श्री अरविंद, दि ब्रेन ऑफ इंडिया, पृष्ठ 17-181
3. श्री अरविंद, ए सिस्टम आफ नेशनल एजुकेशन, पृष्ठ 51
4. पांडे, रामशकल, उदियमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पृष्ठ 300-312
5. त्यागी, गुरुसरन दास, आधुनिक भारत एवं शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2 485-496
6. अरविंदो, श्री (1950), द ह्यूमन सायकल, द आइडियल ऑफ़ ह्यूमन यूनिटी, वार एंड सेल्फ डिटरमिनेशन, श्री अरविंदो आश्रम
7. अरविंदो, श्री (1997), द नेशनल वैल्यू ऑफ आर्ट, पांडिचेरी
8. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 https://www.education.gov.in
9. पाण्डेय, आर (2015), एजुकेशनल फ़िलॉसफी ऑफ श्री अरविंदो, नई दिल्ली, ए. पी. एच. पब्लिशिंग
10. एन.सी.ई.आर.टी. (2021), पोजीशन पेपर ऑन वैल्यू एजुकेशन, न्यू देल्ही, एन.सी.ई.आर.टी.
11. विश्वास, ए. (2000) इन्टीग्रल एजुकेशन एंड श्री अरविंदो, न्यू देल्ही: कान्सेप्ट पब्लिशिंग
12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,पैरा 4.6-4.12,चैप्टर-4:करिकुलम एंड पेडॉगाजी इन स्कूल